B.A. History Hon's, Part-I
Paper: II, Unit-V, Date: 23.11.2020
Lecture No. 19
Session: प्रबोधन काल

प्रबोधन काल: यूरोप में 1650 के दशक से लेकर 1780 के दशक तक की अवधि का प्रबोधन काल या ज्ञानोदय युग कहते हैं। इस अवधि में पश्चिमी यूरोप के सांस्कृतिक एवं बौद्धिक वर्ग ने परम्परा से हटकर तर्क, विश्लेषण तथा वैयक्तिक स्वतंत्रता पर जोर दिया। ज्ञानोदय ने कैथोलिक चर्च एवं समाज में गहरी पैठ बना चुकी अन्य संस्थाओं को चुनौती दी।

परिचय: यूरोप में 17वीं-18वीं शताब्दी में हुए क्रांतकारी परिवर्तनों के कारण इस काल का प्रबोधन, ज्ञानोदय अथवा विवेक का युग कहा गया और इसका आधार पुनर्जागरण, धर्मसुधार आंदोलन व वाणिज्यिक क्रांति ने तैयार कर दिया था। पुनर्जागरण काल में विकसित हुई वैज्ञानिक चेतना ने, तर्क और अन्वेषण की प्रवृत्ति ने 18वीं शताब्दी में परिपक्वता प्राप्त कर ली। वैज्ञानिक चिन्तन की इस परिपक्व अवस्था को 'प्रबोधन' के नाम से जाना है। फ्रांसिस बेकन ने बताया कि विश्वास मजबूत करने के तीन साधन हैं- अनुभव, तर्क और प्रमाण' और इनमें सबसे अधिक शक्तिशाली प्रमाण है क्योंकि तर्क/अनुभव पर आधारित विश्वास स्थिर नहीं रहता।

विशेषताएँ: प्रबोधन के चिन्तकों ने ज्ञान को प्राकृतिक विज्ञानों के साथ जोड़ा। पर्यवेक्षण, प्रयोग और आलोचनात्मक छानबीन की व्यवस्थित पद्धति का प्रयोग ज्ञानोदय के चिन्तकों की नजर में सत्य तक पहुँचने का सक्षम आधार थी। ज्ञान की इसी धारणा के आधार पर प्रबोधन ने परालौकिक अनुमान और ज्ञान में विरोध बताया। प्रयोग एवं परीक्षण पर बल: मध्ययुग में ईसाईमत का प्रभाव इसलिए माना जाता था कि ईश्वर द्वारा निर्मित इस दुनियाँ को मनुष्य नहीं जान सकता। प्रकृति के बारे में हमें पवित्र पुस्तकों के माध्यम से नहीं बल्कि प्रयोगों एवं परीक्षाओं में माध्यम से बात करनी चाहिए।

कार्य-कारण संबंध का अध्ययन: कार्य-कारण का अध्ययन विज्ञान संबंधी प्रबोधन चिन्तन का केन्द्रीय तत्व था। चिन्तकों ने ऐसी पूर्ववर्ती घटना को चिन्हित करने की कोशिश की जिसका होना परिघटना के पैदा होने के लिए अनिवार्य है और पूर्ववर्ती घटना के न होने से परवर्ती घटना नहीं पैदा होती।

मानवतावाद: प्रबोधन युग के चिंतकों ने मानव के खुशी और भलाई पर बल दिया उनके अनुसार मनुष्य स्वभाव से ही विवेकशील और अच्छा है किन्तु स्वार्थी धर्माधिकारियों और उनके बनाए गए नियमों को, रूढ़ आदर्श समाज की स्थापना की जा सकती। बेंजामिन फ्रैंकलिन सहित कई लोगों ने बिजुत की खोज में अपना योगदान दिया।

देववाद: प्रबोधनयुगीन चिंतकों ने कहा कि कोई परमसत्ता है और इस दुनिया के समस्त प्राणी उसी के बनाए हुए हैं और इन सबके साथ दुरता का नहीं बल्कि दयालुता का आचरण करना चाहिए।

समानता एवं स्वतंत्रता पर बल: ज्ञानोदय के चिंतक स्वतंत्रता व स्वच्छंदता के हिमायती थे। दिदेरो ने व्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्ष में तर्क देते हुए कहा- "प्रकृति ने किसी को भी दूसरों को आदेश देने का अधिकार नहीं दिया है, स्वतंत्रता दैवी दान है।"

प्रकृति पर बल: प्रबोधन ने प्रकृति के महत्व को प्रतिपादित किया। चिन्तकों के अनुसार प्रकृति पर बल, सत्य रूप में सौन्दर्य से परिपूर्ण है। प्रकृति की ओर लौटना, चलना, स्वतंत्रता की प्रकृति अपने सत्य रूप में सौन्दर्य

प्रबोधन युग के प्रमुख विचारक

प्रबोधनयुगीन चिन्तन एवं पुनर्जागरण में अन्तर; पुनर्जागरणकालीन मध्यमवर्गी अभी आत्मविश्वास से युक्त नहीं था। अतः वह इस बात पर बल देता था कि अतीत से प्राप्त ज्ञान ही श्रेष्ठ है और बुद्धि की बात करते हुए उदाहरण के रूप में ग्रीक एवं लैटिन साहित्य पर बल देता था। जबकि प्रबोधनकालीन मध्यमवर्गी में शक्ति और आत्मविश्वास आ चुका था इस कारण उसने राजतंत्र की निरंकुशता एवं चर्च के आडम्बर के खिलाफ आवाज उठाई और तर्क के माध्यम से अपनी बात व्यक्त की।

पुनर्जागरण का बल ज्ञान वही है जिसका परीक्षण किया जा सके और जो व्यवहारिक जीवन में उपयोग में लाया जा सके इस तरह प्रबोधनकालीन चिन्तन का बल व्यवहारिक ज्ञान पर था।

पुनर्जागरणकालीन वैज्ञानिक अन्वेषण निजी प्रयास का प्रतिफल था। दूसरी तरफ प्रबोधनकालीन वैज्ञानिक अन्वेषण तथा वैज्ञानिक क्रांति सामूहिक प्रयास का नतीजा था। 1. आधुनिक विश्व के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

2. वैज्ञानिक एवं तकनीकि प्रगति ने औद्योगिकरण के नया युग का आधार तैयार किया
3. निरंकुश राजतंत्र पर चोट फलतः लोकप्रिय सरकारों की स्थापना।
4. चिन्तकों के द्वारा प्रतिपादित व्यक्ति स्वातंत्र्य की बात ने उदारवादी सरकार के निर्माण मार्ग का प्रशस्त किया।
5. व्यक्ति स्वतंत्र पैदा हुआ है, जैसे नारे और व्यक्ति की स्वतंत्रता की माँग ने आर्थिक स्वतंत्रता को प्रोत्साहित किया। एडम स्मिथ का कहना था कि प्रकृति के नियम की तरह बाजार के भी अपने शाश्वत नियम है अतः इसमें बाह्य हस्तक्षेप की गुंजाइश नहीं है और बाजार के ये शाश्वत नियम औचित्य पर आधारित है। इस तरह "मुक्त अर्थव्यवस्था" का सिद्धांत प्रतिपादित हुआ।
6. भारत में 19वीं सदी में चले सामाजिक सुधार आन्दोलन पर भी इसका असर दिखाई पड़ता है। आधुनिकीकरण के सिद्धांतों ने समाजों को वर्गीकृत करने और आधुनिक लोकतांत्रिक शासन का मॉडल खड़ा करने के लिए अतीत और वर्तमान, परम्परा और आधुनिकता सम्बन्धी ज्ञानोदय की समझदारी से मदद ली। समाज सुधार आन्दोलनों ने ज्ञानोदय के मानवतावादी विचारों से प्रेरणा ली और धर्म तथा रीति-रिवाजों को मानव विवेक के सिद्धांतों के अनुरूप ढालने की कोशिश की। प्रबोधनकालीन व्यक्ति की भावना, वैज्ञानिक ज्ञान और स्वतंत्र उद्यम में तत्कालीन विश्वास आज भी लोकप्रिय कल्पना को प्रभावित करता है।

सीमाएँ: प्रबोधनकालीन प्रमुख चिन्तक मध्यमवर्गी बुद्धिजीवी थे। यह चिन्तन बुर्जुवा विश्व दृष्टि को अभिव्यक्त करता है।

ये बुद्धिजीवी कानून के शासन तथा विधि निर्माण पर बल देते थे परन्तु विधि निर्माण में मध्यवर्ग का ही वर्चस्व स्थापित करना चाहते थे।

इन चिन्तकों की दृष्टि कुछ हद तक "यूरोपियन" प्रतीत होती है

क्योंकि ये भविष्य के प्रति अतिरिक्त आशावादी दिखाई देते थे। जिसे जब विज्ञान के प्रति उस विश्वास को 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में चुनौती मिली जब विज्ञान और तकनीकि विश्वास ने हिंसा और असमानता को बढ़ावा दिया।

□ शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी॰ बी॰ कॉलेज, जयनगर